nbt.india
एकः सूते सकलम्

9 वर्ष से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-9063-3

पहला ईप्रिट संस्करण : 2020

© अशोक कुमार शर्मा

Kamaal Kaa Jadu *(Hindi Original)*

₹ 35.00

ईप्रिट द्ववारा ऑनेट टेक्नो सविसेज प्रा.लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

कमाल का जादू

अशोक कुमार शर्मा

चित्रांकन : राजकुमार घोष

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

कई दिन से चौथी क्लास की ऋद्धि स्कूल नहीं आ रही थी। स्कूल में बच्चे जितने मुँह उतनी तरह की बातें कर रहे थे। कोई कहता कि किसी लड़के ने उसे तंग किया था। कोई कहता कि स्कूल से वापसी रास्ते में कोई अंकल उसे तंग करते थे। डर के मारे उसने स्कूल ही आना बंद कर दिया।

स्कूल की प्रिंसिपल शोभा मैडम को यह सब पता चलते देर नहीं लगी। उन्होंने बच्चों से इस बारे में बात की। कई लड़कों ने भी उनसे शिकायत की कि उन्हें भी बड़े बच्चे और कई बार कई अंकल लोग डराते हैं।

अगले ही दिन स्कूल की प्रार्थना सभा में प्रिंसिपल बोलीं, ‘‘कल चौथे पीरियड के बाद स्कूल नहीं होगा। ऑडीटोरियम में बच्चों को मुफ्त में जादू दिखाया जायेगा।’’

बच्चों का अगला दिन, चौथे पीरियड की प्रतीक्षा में कटा। चौथी घंटी बजते ही सभी ऑडीटोरियम की तरफ भागे जा रहे थे।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

थोड़ी ही देर में ऑडीटोरियम खचाखच भर गया। कई टीवी चैनलवाले भी आ गये।

मंच पर थे एक लंबे-चौड़े से व्यक्ति। सुनहरे रंग की पगड़ी और चांदी जैसी चमकदार अचकन। बड़ी-बड़ी आँखें, गोल-मटोल गोरे चेहरे पर घुमावदार मूंछें और नुकीली दाढ़ी। उन्होंने सभी को प्रणाम किया। बच्चों ने खुशी में तालियाँ पीटना शुरू कर दिया।

nbt.india
एकः सूते

जादूगर के सामने एक बड़ी सी मेज रखी थी। मेज पर कुछ भी नहीं था। उसके पीछे एक छोटी मेज पर स्कूल की हैड गर्ल पल्लवी दीदी थीं। वे जादूगर की सहयोगी बनी हुई थीं।

पता है, ये पल्लवी भी पहले बहुत डरपोक थी। स्कूल में उसने जूडो-ताईक्वांडो सीखा। अब वह किसी से भी नहीं डरती। वह सभी की मदद करती है। तभी उन्हें हैड गर्ल चुना गया है।

मंच पर आते ही जादूगर ने बच्चों से पूछा, ‘‘स्कूल में सबसे ज्यादा शैतानी कौन करता है?’’

तुरंत ही हर क्लास के बच्चों ने अपनी क्लास के ऊधमी और सबको तंग करने वाले बच्चों का नाम बताना शुरु कर दिया। जिन बच्चों का नाम आता, वे मंच पर आ जाते। अपनी गर्दन नीचे कर खड़े हो जाते। सभी को लग रहा था कि इन बच्चों को जरूर दंडित किया जायेगा।

जादूगर ने उनसे पूछा, ''तुम लोगों में से कौन सबसे बलवान है?'' इन बच्चों ने उदयवीर का नाम लिया। उदयवीर का पूरे स्कूल में आतंक था। दो बार फेल हो चुका था। कई बच्चों को पीट चुका था। वह अपने ज्योमेट्री बाक्स में चाकू रखता था।

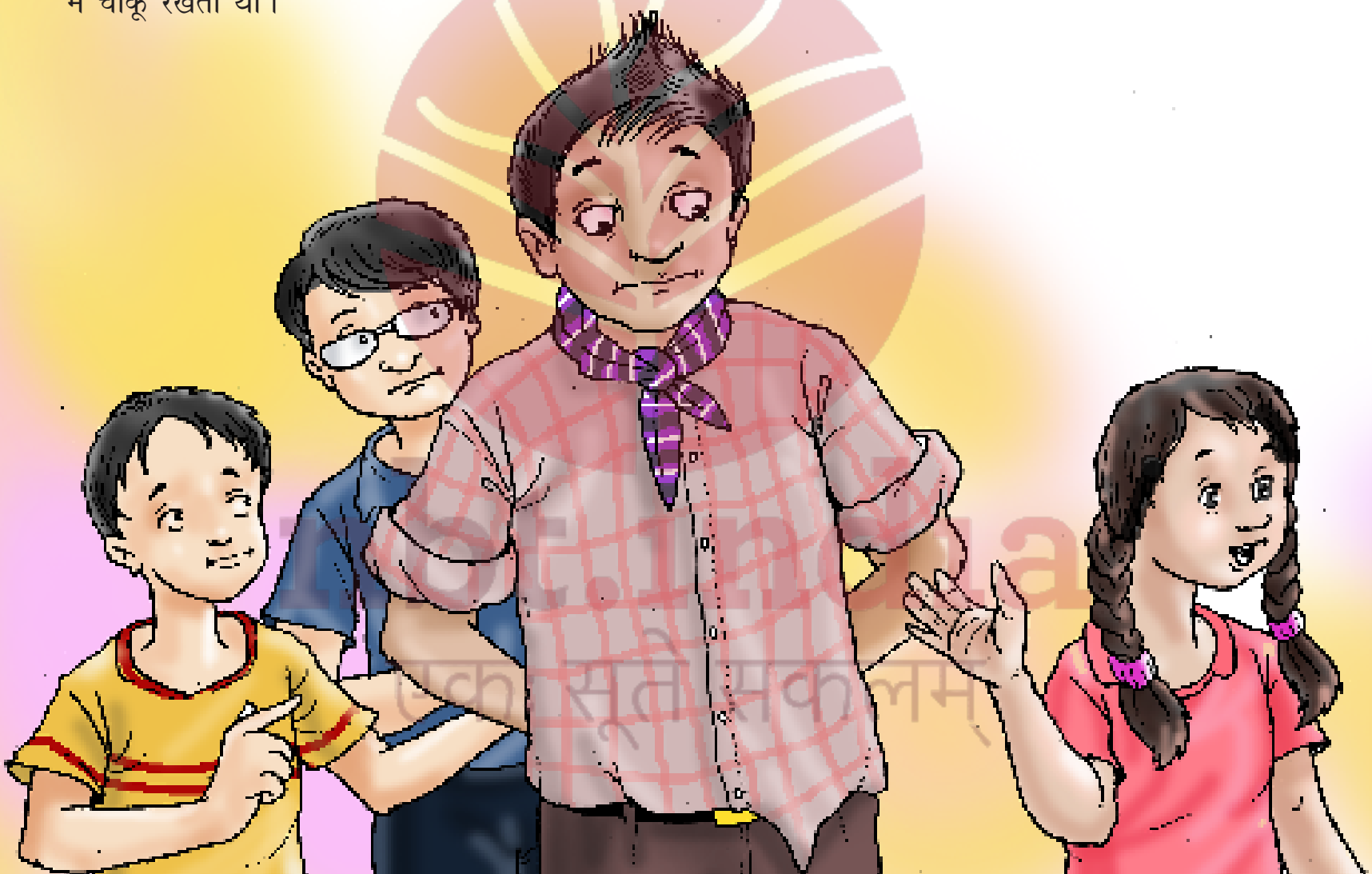

जादूगर ने नीचे बैठे बच्चों से पूछा, ‘‘इन बच्चों से सबसे अधिक कौन डरता है?’’ कुछ ही देर में पाँच बच्चे ऊपर आ गये। उनमें सबसे छोटी थी तीसरी क्लास की आद्या।

nbt.india

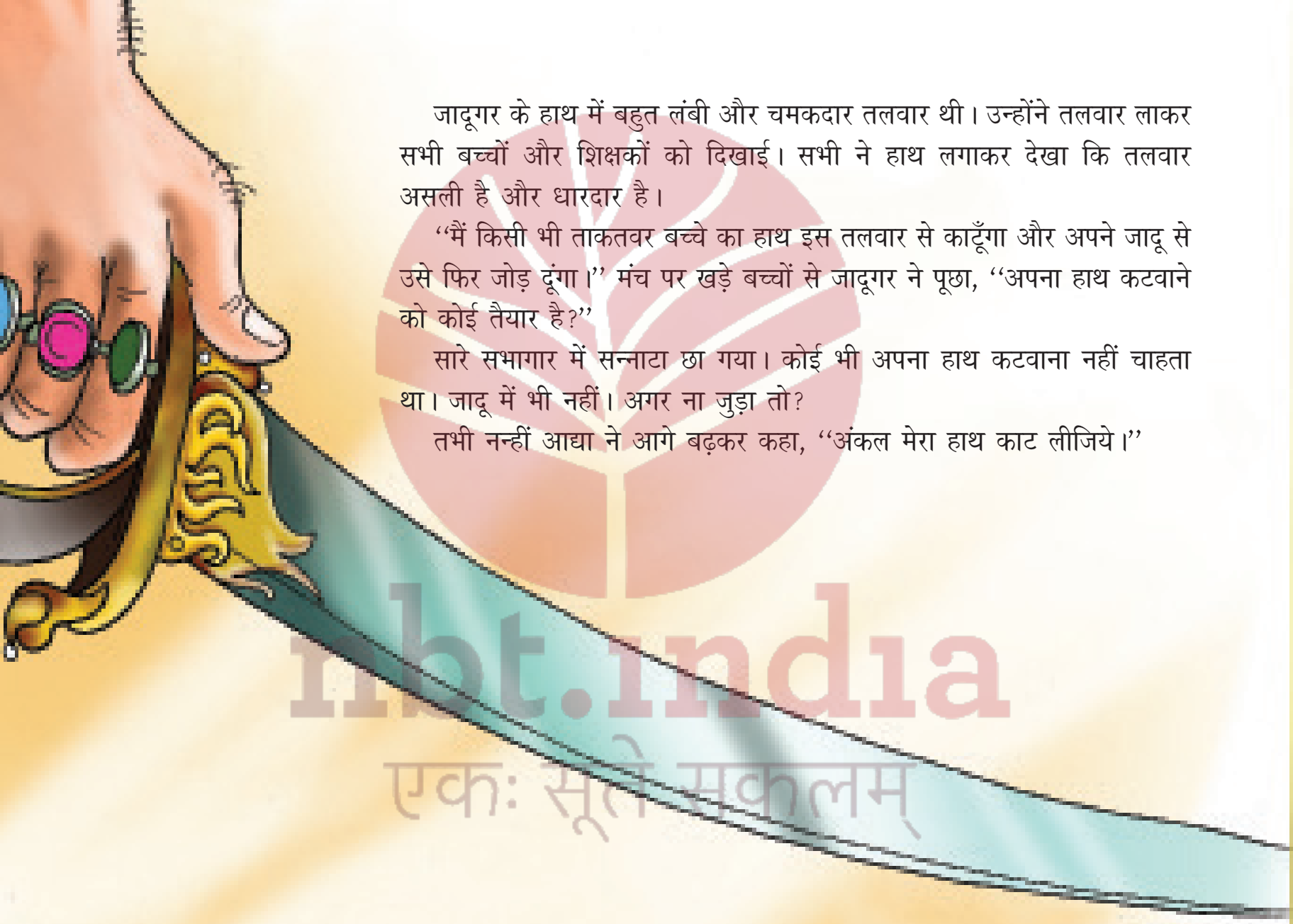

जादूगर के हाथ में बहुत लंबी और चमकदार तलवार थी। उन्होंने तलवार लाकर सभी बच्चों और शिक्षकों को दिखाई। सभी ने हाथ लगाकर देखा कि तलवार असली है और धारदार है।

"मैं किसी भी ताकतवर बच्चे का हाथ इस तलवार से काटूँगा और अपने जादू से उसे फिर जोड़ दूंगा।" मंच पर खड़े बच्चों से जादूगर ने पूछा, "अपना हाथ कटवाने को कोई तैयार है?"

सारे सभागार में सन्नाटा छा गया। कोई भी अपना हाथ कटवाना नहीं चाहता था। जादू में भी नहीं। अगर ना जुड़ा तो?

तभी नन्हीं आद्या ने आगे बढ़कर कहा, "अंकल मेरा हाथ काट लीजिये।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

बच्चों ने आद्या के लिये खूब तालियाँ बजाईं। हेड गर्ल पल्लवी ने भी उससे हाथ मिलाया और उसका हाथ पकड़कर, बातें करने लगी।

अब जादूगर ने मंच पर खड़े बच्चों के मुँह के आगे माइक लगाकर पूछा, ‘‘हाथ कटवाओगे? कटवा लो। बहुत दमदार हो। डरते क्यों हो?’’ मगर कोई तैयार नहीं हुआ।

अब आद्या स्टेज पर अकेली थी। चारों ओर ऐसा सन्नाटा कि सुईं भी गिरे तो सब सुनें।
जादूगर ने आद्या के हाथ को पकड़कर उसमें धीरे धीरे तलवार घुसानी चालू की।
कई बच्चों की चीखें निकल गयीं। कुछ बच्चों ने आँखों पर हाथ रख लिये।

कुछ ही देर में जादूगर ने तलवार आद्या के हाथ के आर-पार निकाल दी। उसके हाथ से खून टपक रहा था। जादूगर ने उससे पूछा, "डर तो नहीं लग रहा? दर्द हो रहा है?" आद्या ने बहादुरी से मना किया। ऑडीटोरियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

पल्लवी ने जादूगर को खाली हैट दिया। सबको दिखाकर जादूगर ने खाली हैट में से खरगोश निकाला। एक बड़े से ड्रम में पानी भरा गया और उस ड्रम में जादूगर को बंद किया गया। कुछ ही देर बाद जादूगर उस ड्रम से गायब हो गए। जब वे ऑडीटोरियम के पहले दरवाजे से भीतर घुसे तो बच्चों को मजा ही आ गया। इसके बाद भी बहुत से जादू हुए।

अब प्रिंसिपल अपनी जगह से उठीं और स्टेज पर आ गईं। ''सभी शांत रहें।''

बच्चे समझ गये, जादू खत्म। अब होगा भाषण।

लेकिन उस दिन प्रिंसिपल का भाषण सुनकर बच्चों की आँखों में आँसू आ गये।

उन्होंने कहा ''बच्चो, जिन बड़ों या बच्चों की बुरी बातों से आप डरते हैं, उनसे आपको बचाने की ताकत बहुत से लोगों के पास है। पुलिस, आपके पापा-मम्मी, बड़े भाई-बहनों, स्कूल के सीनियर और शिक्षक.... और भी बहुत हैं। समस्या तब बिगड़ती है, जब आप किसी को कुछ नहीं बताते।''

सबने देखा, पूरे स्कूल के बच्चों और शिक्षकों से कड़ाई करने वालीं प्रिंसिपल मैडम की आँखो में भी आँसू थे। वे बोलीं, ''जब भी मुसीबत आये आप फौरन ही जितने भी लोगों को बता सकते हैं, तुरंत बतायें। हरेक बच्चे के माँ-बाप और बड़े, उनकी रक्षा स्कूल ही नहीं, बाहर की दुनिया में भी कर सकते हैं।''

प्रिंसिपल मैडम ने नन्हीं आद्या के मुँह के आगे माइक लगाकर पूछा, ''तुम्हे डर नहीं लग रहा था?'' आद्या ने कहा, ''सब लोग सामने बैठे थे। स्टेज पर मेरे साथ पल्लवी दीदी थीं और आप थे। डर क्यों लगता?''

बच्चों ने आद्या के लिये खूब तालियाँ बजायीं। तालियों के बीच ही प्रिंसिपल की आवाज गूँजी ''डर से कभी भागना नहीं चाहिए। उसका मुकाबला वैसे ही करना चाहिए, जैसे आप परीक्षाओं का करते हैं।''

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अगले दिन प्रार्थना सभा में ऋद्धि को वापस आया देखकर बच्चे खुशी से भर गये। उसने स्कूल का समाचार टेलीविजन पर देखा था। जादू भी और प्रिंसिपल का भाषण भी। तभी उसने डर और बुरे लोगों का मुकाबला करने की ठानी। और आज वह स्कूल आ गई।

अंत में एक बात गुपचुप!

नन्हीं आद्या ने किसी बच्चे को कभी नहीं बताया कि जादूगर ने उसके हाथ की खाल में तलवार घुसाई ही नहीं थी। याद है ना जादू के प्रदर्शन के समय वह पल्लवी से बातें कर रही थी। उसी समय जादूगर मंच पर खड़े बच्चों को हाथ काटने की बात कह रहे थे। ठीक उसी समय पल्लवी ने आद्या के हाथ पर गुब्बारे जैसा पतला पारदर्शी रबर चढ़ा दिया था। कोई भी यह इस लिये नहीं देख पाया क्योंकि सबका ध्यान जादूगर के सामने गिड़गिड़ाते बच्चों पर था।

जादूगर ने अपनी तलवार की नोक उसी रबर के आर-पार की। बच्चों को लगा आद्या का हाथ कट गया। उसकी तलवार भी खोखली थी। उसके हत्थे पर एक बटन था। जादूगर ने जैसे ही बटन दबाया उससे खून जैसा रंग निकल। रंग हाथ के झिल्लीवाले भाग से होकर नीचे टपकने लगा था।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

इन दिनों आद्या को स्कूल में सभी बच्चे पहचानने लगे हैं। वह बच्चों को जूडो-कराटे सिखाती है। वह बताती है कि जादू वास्तव में विज्ञान, यंत्रों तथा सहयोगियों की मदद से होने वाला खेल है। जादू में वैसे कोई जादू नहीं होता।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अशोक कुमार शर्मा डी. फिल. (जनसंपर्क व पत्रकारिता), एम. एस. सी. (वनस्पति विज्ञान) और एम. ए. (हिंदी) हैं। वे जनसंपर्क के प्रशिक्षक व सलाहकार के रूप में देश में जाने जाते हैं। श्री शर्मा की 45 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

राजकुमार घोष बच्चों की पुस्तकों के चित्रंकन के क्षेत्र में चर्चित नाम हैं। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से कला में मास्टर डिग्री प्राप्त की है।